22 अक्टूबर 2010 को कीट–कीस का अवलोकन किये भारत के महामहिम उपराष्ट्रपति मोहम्मद हामिद अंसारी

मेरे मित्रों और प्यारे बच्चों !कीस और कीट के विषय में जो कुछ भी मैंने सुना था उससे कहीं अधिक हैं ये दोनो संस्थाएं हैं।मुझे यह बताया गया था कि हजारों बच्चों की ये दोनो अच्छी संस्थाएं हैं लेकिन यहां आकर जो कुछ भी मैंने देखा वह सचमुच अवर्णनीय है।इन दोनो संस्थाओं का परिवेष एक एक विकसित शहर के जैसा है।इन दोनो संस्थाओं के संस्थापक डॉ. अच्युत सामंत इस भगीरथ प्रयत्न से एक बात तो स्पष्ट है कि अगर एक व्यक्ति चाहे तो समाज के लिए बहुत कुछ कर सकता है।डॉ. सामंत के कार्य विष्व में अतुल्य हैं अथवा ये कहें कि इनके जैसा काम करने वाले विष्व में कुछ ही लोग होंगे।

आज मैं यहां पर कोई भाषण देने नहीं आया हूँ,मैं तो सिर्फ आप बच्चों को सुनने के लिए आया हूँ।आप जो कुछ भी कहेंगे मैं उसे सुनूंगा,क्योंकि आप ही देष की भावी पीढ़ी हैं और यह देष आप पर पूरी तरह से निर्भर होगा।

बहुत–बहुत धन्यवाद!

1 **कीस की एक छात्रा का प्रष्न –**

मान्यवर, उपराष्ट्रपति जी श्रद्धेय सामंत सर और मेरे सभी सर एवं मैडम!

सर, कीस के छात्र और छात्रा हैं।हमारी संख्या 12,000 से लेकर 15,000 तक हैं।हममें से अधिकांष बच्चे यह कभी नहीं सोचते थे कि हमलोगों को यहां पर मिलने वाली षिक्षा एक वास्तविक षिक्षा होगी। हम बड़े भाग्यषाली हैं कि हमें अपनी मेधा के विकास के लिए कीस जैसा विष्वस्तर का मंच मिला है।सर,यहां पर हमलोगों को मुफ्त षिक्षा मिलती है।रहने,खाने और हमारी जीवन के विकास के लिए सभी आवष्यक चीजं मुफ्त मिलतीं हैं।हमलोग यहां पर औपचारिक षिक्षा के साथ ही साथ जीवनोपयोगी प्रषिक्षण भी प्राप्त करते हैं।हमलोग खेलकूद में भी बेहतर प्रदर्षन करते हैं।कीस के मेधावी बच्चों को उच्च

षिक्षा जैसे इंजीनियरिंग,मेडिकल,कानून आदि की षिक्षा कीट विष्वविद्यालय से मुफ्त मिलती है।हम आषा करते हैं कि यहां पर हम अपने सपनों को साकार कर सकते हैं।हमारी यह चाहत है कि हमारी गौरवषाली संस्था कीस विष्व स्तर तक पहुंचे।हमलोगों की यह भी कामना है कि हमारी आदिवासी परंपरा और संस्कृति कीस के माध्यम से पूरे विष्व में फैले। धन्यवाद!

उपराष्ट्रपति का उत्तरः ओड़िषा के राज्यपाल श्री भंडारे जी,डॉ. सामंत जी,मेरे बुजुर्ग मित्र डॉ. हरी गौतम,प्रो. कोलस्कर,मित्रों भाइयों एवं बहनों! सबसे पहले तो मैं यह बता दूं कि आज यहां पर मेरे वक्तव्य देने का कोई इरादा नहीं है।।यहां आने के मेरे दो उद्देष्य हैं– पहला,एक ऐसी संस्था को देखना जिसके विषय में मैंने बहुत कुछ सुना था और यहां आज जो कुछ भी मैंने उस संस्था को अपनी आंखों से देखा वह कहीं मेरे सुनने से बहुत अच्छा है।मेरे यहां आने का दूसरा उदेष्य यह है कि मैं देष की भावी युवा पीढ़ी से आज के समाज की कुछ ज्वलंत समस्याओं पर विचार–विमर्ष कर सकूं।विवेक का एकाधिकार किसी को नहीं है,न सरकार को,न संसद को लेकिन मैं सोचता हूँ कि जब देष की 1.2 विलियन लोग आपस में मिलकर किसी समस्या का समाधान ढूढ़ते हैं तो वह सबके लिए और पूरे देष के लिए लाभकारी सिद्ध होगा।

मैंने पहले भी कहां था और आज भी कहता हूँ कि मैं यहां अपने युवा साथियों से कुछ सुनने के लिए आया हूँ।मैं कोषिष करुंगा कि अपनी पुरी क्षमता से इनके सवालों का जबाब दे सकूं।

प्रष्न – सुप्रभात महोदय, मैं बेनर्जी, कीट लॉ स्कूल के चौथे वर्ष का छात्र हूं।मेरा प्रष्न है कि न्यायपालिका और शसस्त्र सैनिक बलों में व्याप्त भ्रष्टाचार क्यों है?महोदय,हाल ही में समाचार पत्रों में यह खबर छपी थी कि भ्रष्टाचार से हमारी न्यायपालिका के उच्च पदाधिकारी भी वंचित नहीं हैं।यह सुनकर मैं हतप्रभ हूँ,महोदय, भ्रष्टाचार को दूर करने के लिए हम आपका सुझाव चाहते हैं।हम अपनी लॉ की पढ़ाई पूरी करने के बाद समाज में फैले भ्रष्टाचार को कैसे कम कर सकेंगे?

महोदय,भ्रष्टाचार की रोक थाम के लिए सरकार क्या कदम उठा रही है?

उपराष्ट्रपति जी का उत्तर – धन्यवाद! मैं सोचता हूँ कि आप सबसे ऊपर हैं, आपने जो प्रष्न पूछा है वह एक ज्वलंत प्रष्न है।क्या भारत की न्यायपालिका व सषस्त्रवाहिनी के निम्न और उच्च स्तर के अधिकारी हमारी राजनीतिक प्रणाली के अंग नहीं है?सच तो यह है कि जिस प्रकार व्यक्ति से समाज बनता है और समाज से राष्ट्र।और जैसा व्यक्ति होगा वैसा ही हमारा समाज होगा।समाज में हम सब एक साथ रहते हैं।हमने पढ़ा है कि कुछ संक्रामक बीमारियों होती हैं जैसःकलरा,डेंगु जो बड़ी तेजी से फैलती हैं ठीक उसी प्रकार भ्रष्टाचार भी हमारे सामाजिक जीवन की संक्रामक बीमारी जैसा है।यह कहते हुए मुझे कोई झिझक नहीं है कि न्यायपालिका और सशस्त्रवाहिनी आदि में व्याप्त भ्रष्टाचार आनेवाले कल के लिए गलत संकेत दे रहा है।अगर भ्रष्टाचार में लिप्त किसी भी व्यक्ति को चाहे वह निम्न या उच्च पदाधिकारी ही क्यों न हो।उस पर सख्त से सख्त कार्रवाई होनी चाहिए जिससे भ्रष्टाचार की समस्या पनप न सके।जड़ से समाप्त हो जाए।मैं सोचता हूँ कि हमारे शाष्वत मूल्य प्रणाली में कहीं न कहीं खोट अवष्य है।हमारा समाज परंपराओं में विष्वास रखता है और यही कारण है कि हमारे समाज में रहने वाले लोग सामाजिक आस्था में विष्वास रखते हैं उनका विष्वास विष्व में नहीं है पूर्व या पष्चिम में नहीं है जिसके कारण वे मानते हैं कि भ्रष्टाचार स्वतः नहीं है भ्रष्टाचार एक बुराई है,एक बीमारी है,तो इससे लड़ने की जरुरत है और यह लड़ाई एक व्यक्ति की नहीं एक पुलिस अधिकारी की नहीं बल्कि सामूहिक होनी चाहिए।इसकी शुरुआत देष के एक नागरिक से, विद्यालय के सभी बच्चों से, विष्वविद्यालय के प्रत्येक विद्यार्थी से और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रत्येक व्यक्ति से शुरु की जा सकती है।इसलिए मैं सोचता हूँ कि आपके प्रष्न का उत्तर हमसब के लिए एक समस्या है। जो किसी भी रुप में न्यायपालिका और शसस्त्र सेनाओं तक नहीं जाना चाहिए इसका विस्तार जन सेवा पूरी तरह से राजनीतिक प्रणाली से लेकर समाज के प्रत्येक वर्ग तक जानी

चाहिए।यह कोई नई बीमारी नहीं है।यह एक बहुत पुरानी बीमारी है।इसकी जड़ें अतल गहराइयों तक फैली हैं।आइए, हम सामूहिक रुप से सोचें और व्यक्तिगत रुप से इस पर अंकुष लगाएं,इस दौरान कोई भी मामला भ्रष्टाचार से संबधित आपके समक्ष आए तो आप उसके खिलाफ अपनी आवाज अवष्य बुलंद करें,कभी चुपचाप न बैठें उसे आप अलग अंदाज से देखें वही बिंदु है।

प्रष्न – सुप्रभात सर,मैं हूं सौरभ प्रसाद बी.टेक मैकेनिकल इंजीनियरिंग अन्तिम वर्ष का छात्र, मान्यवर उपराष्ट्रपति जी, हमने समाचार पत्रों और मीडिया के प्रतिवेदनों से यह जाना है कि भारत के खिलाफ जातीगत भेदभाव की षिकायते बढ़ी हैं।इस संबंध में आपकी क्या राय है? इसे कैसे नियंत्रित किया जा सकता है?

उपराष्ट्रपति का उत्तर – मैं नहीं समझता हूं कि भारत के खिलाफ जातीगत भेदभाव जैसी कोई बात है।हो सकता है कि विष्व के किसी भाग में यहां तक की भारत में भी इस तरह की कुछ दकीआनुसी बातें कोई करता हो।संकट की घड़ी में वह खुल कर सामने आएगा।सामान्य मनुष्य इस मामले में अच्छे हैं।लेकिन कभी–कभी यह सामने आ सकता है।हमें एक बात समझनी होगी –ईष्वर ने संसार को एक जैसा नहीं बनाया है।अलग–अलग लोग हैं।अलग–अलग जातीयां हैं।अलग–अलग सोचवाले समूह हैं।अलग–अलग भाषाओं के लोग हैं।तो इसका कारण प्राकृति है।हम इनके साथ रहें अथवा अपना माथा पटकें, मैं सोचता हूं कि हम जो सौ साल पहले थे आज नहीं हैं।संधर्ष जारी है।हमें इससे सबक भी मिली और वह भी बड़ी दूर की बात नहीं है।राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने यह बात बार–बार उदाहरण के साथ कही है कि उन बुराइयों के साथ हमें सतत संधर्ष की जरुरत है। हमने इसे गांधी जी के व्यक्तिगत अनुभव में भी पाया है। अभी–अभी विष्व के दूसरे हिस्से में डॉ. नेलषन मंडेला ने संस्थागत क्षेत्रीय जातीवाद के खिलाफ संधर्ष किया और उसमें उन्हें बेजोड़ सफलता मिली।अमेरिका में बेजोड़ सफलता मिली।अमेरिका में मार्टिन लुथर किंग ने ऐसा ही कुछ किया,इसलिए हर जगह इसके निराकरण से संबंधित बहुत सारे उदाहरण हैं।

प्रष्न – नमस्ते सर, मैं बायोटेक्नोलोजी स्कूल का छात्र हूं, महामहिम उपराष्ट्रपति जी हमसब जानते है कि बायोटेक्नोलोजी तेजी के साथ बढ़ रहा है वैज्ञानिक सोध पत्र और मीडिया प्रतिवेदन से यह पता चलता है कि डी.एन.ए. और क्रोमोजोम के परखनली के समीश्रण से बच्चा पैदा हो सकता है।इसलिए मेरा प्रष्न है कि यह विकाष हमारे भावी पिढ़ी को बनाने में कितना मद्द कर सकता है?

उपराष्ट्रपति का उत्तर – धन्यवाद! पहले तो मैं स्वीकार करता हूं कि मैं विज्ञान का आदमी नहीं हूं। इसलिए इस विषय पर मेरा उत्तर देना या अपने अनुभव को व्यक्त करना उचित नहीं होगा।लेकिन एक इतिहास के विद्यार्थी होने के कारण यह जरुर कह सकता हूं ये नई खोज हमारे सामने चुनौती के रुप में है। इन में कुछ चुनौतियां तकनीकी चुनौतियां है तो कुछ नैतिक लेकिन मानव अनुभव यह बताता है कि ये चुनौतियां अस्वंभावी है।मैं ये नहीं कहता हूं कि बायोटेक्नोलाजी खराब है और उस पर रोक लगनी चाहीए।आज अन्य टेक्नोलोजी की तरह बायोटेक्नोलोजी भी है।जो मानव के सोध और अनुसंसाधन का परिणाम है।आज हमलोग नये टेक्नोलोजी पैदा किए है अगर एक टेक्नोलोजी हमारे सामने कुछ प्रष्न अथवा कुछ समस्या लाती है तो हमें इसका समाधान करना होगा।मैं नहीं सोचता हूं कि बायोटेक्नोलोजी एक गमगिर झटका है।नई खोजो की रास्ते में जिस प्रकार पृथ्वी सूरज की परिक्रमा करती है अथवा यह वास्तवीक सच्चाई है कि आज का मानव चाँद पर पहुच चुका है। हमें समस्याओं के समाधान के लिए सोचने की आवष्यकता है।लेकिन ऐसा कभी नहीं होना चाहीए हम वैज्ञानिक अनुसंधान को बन्द करदें।

प्रष्न – सुप्रभात सर, मैं मेडीसिन स्कूल का एक छात्र हूं महोदय मैं कीस से बारहवीं कक्षा पास किया हूं और मैं ओड़िषा की एक पिछड़ी जाती से हूं मैं किम्स के एम.बी.बी.एस. का छात्र हूं और मेरा एम.बी.बी. एस. का पूरा खर्च कीस और कीट पूरा करता है।इसलिए मैं इस मेडीकल षिक्षा को प्राप्त करने में सक्षम हूं मेरा प्रष्न है कि क्या भारत सरकार की कोई ऐसी योजना है जिसके तहत मेरे जैसे अनेक गरीब

आदिवासी भाई बहन सरकारी खर्च से उच्च षिक्षा प्रप्त कर सके और राष्ट्र के निर्माण में अपने को लगा सके?

उपराष्ट्रपति का उत्तर – धन्यवाद! मेरा यह मानना है कि सरकार सामाजिक सशक्तिकरण के क्षेत्र में समाज के कुछ गरीब के मेधावी बच्चे को छात्रवृति अवष्य प्रदान करती है।वैसे तो मेरे पास कोई ठोस जानकारी नहीं है कि यह योजना आवष्यकतामंद गरीब मेधावी आदिवासी बच्चों के लिए पूरी है या नहीं।लेकिन मैं यह जरुर जानता हूं कि केंद्र सरकार और राज्य सरकार दोनों के पास ऐसी योजनाएं हैं। मैं आपसे सहमत हूं कि इस योजना को और सक्रीय बनाने की आवष्यकता है।चाहे विज्ञान और तकनीकी का क्षेत्र हो अथवा ज्ञानार्जन की अन्य कोई शाखा की, मेधावी गरीब आदिवासी बच्चों को बेहतर सुविधाएं अवष्य मिलनी चाहिए।आज समाज के विकास के लिए दस साल पहले अथवा बीस साल पहले अथवा चालीस साल पहले जो राषि इस योजना के तहत दी जाती थी उसे बढ़ाने की आवष्यकता है और मैं समझता हूं इसके लिए सरकार कोई न कोई समाधान अवष्य ढूंढ़ निकालेगी।अभी हमलोग आधेरास्ते में है और हमें बहुत दूर जाना है।

प्रष्न – नमस्ते सर, मैं बी.टेक. फाइनल इयर का छात्र हूं। सर, हमलोग बहुत मेहनत से पढ़ते हैं और प्रषिक्षण प्राप्त करते है।हमारा कीट विष्वविद्यालय एक निजी विष्वविद्यालय है जिसके कारण हमलोगों की तुलना सरकारी संस्थाओं से नहीं की जाती है जिसके कारण शुरु में नौकरी पाने में हमें बहुत दिक्तों का सामना करना पड़ता है।हमारे सीनियर भाई–बहनों ने यह सिद्ध कर दिया है कि वे आई.आई.टी. छात्र से बेहतर नहीं तो उनसे कम भीनहीं हैं।उपराष्ट्रपति जी हमें ऐसे में किस प्रकार के परिवर्तन की आवष्यकता है जिससे कि हम अपने अन्दर वैसा ज्ञान,वैसी क्षमता और वैसी दक्षता ला सकें?

उपराष्ट्रपति का उत्तर – मेरा यह मानना है कि सरकार निजी विष्वविद्यालयों को भी पूरी तरह से सरकारी विष्वविद्यालय मानती है।इसके अनेक उदाहरण हैं।हो सकता है कि इसके लिए केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय और विष्वविद्यालय अनुदान आयोग

की कुछ निर्धारित मानदण्ड व शर्ते हों।लेकिन हमें आपके प्रष्न से और ऊपर सोचने की जरुरत है।वास्तव में निजी और सरकारी का कोई महत्व नहीं है।आपकी डिग्री अथवा प्रमाण पत्र डीम्ड विष्वद्यिालय का है अथवा सरकारी ,आपकी डिग्री या उपाधि छोटे विष्वविद्यालय की है या बड़े विष्वविद्यालय की,प्रख्यात विष्वविद्यालय की है या सामान्य विष्वविद्यालय की ।वह प्रमाण पत्र हर तरह से प्रमाणपत्र है और वह पूरी तरह से वैध्य है।क्योंकि एक बार आप नौकरी में चले जाते हैं तो आपका मूल्यांकन आपकी डिग्री से नहीं आपके काम के प्रदर्षन से होता है और तब इस बात का कोई महत्व नहीं रह जाता कि आप किस संस्था से आए हैं।

प्रष्न – सुप्रभात सर, मैं निधि सिंह एल.एल.बी. के चौथे वर्ष की छात्रा हूं।मेरा प्रष्न है कि आज के युवाओं को राजनीति में हिस्सा लेना चाहिए अथवा नहीं?कानून की एक छात्रा होने के नाते जहां तक मैं अनुभव करती हूं आज भारत के राजनीतिक ढ़ांचे में सुधार की आवष्यकता है।आज राजनीति का संसार भ्रष्ट हो चुका है। जहां तक मैं अनुभव करती हूं कि आज अधिक से अधिक युवाओं को राजनीतिक प्रणाली में आने की आवष्यकता है।सच तो यह है कि आज की कुल आबादी का अधिसंख्यक युवा ही हैं।हमलोग किस प्रकार उन्हें राजनीत में आने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं जिससे की भारतीय प्रजातंत्र अधिक से अधिक मजबूत हो सके?

उपराष्ट्रपति का उत्तर – भारतीय समाज का युवा समुदाय भी भारत का एक नागरिक है।यह कानून का विषय है और आप नागरिक है तो आपका यह अधिकार भी है कि आप भारत के सामाजिक और राजनैतिक जीवन में हिस्सा लें।अपने विचार दें।चुनाव लड़ें, चुनाव जीतें इसलिए उत्तर बहुत सरल है। आप को अधिकार है राजनीति में हिस्सा लेने का इतना काफी नहीं है आपका यह कर्तव्य भी बनता है कि आप राजनीति में हिस्सा लें आप जीवन के पथ पर चढ़ें।आपकी बौद्धिक गतिविधियां बड़ी हो जाएं।लेकिन देष के नागरिकों के मौलिक कर्तव्य सबसे ऊपर है।इसे हमें समझना होगा।बहुत सारे लोग हमारे देष में भारतीय संविधान के विषय में बातचीत करते हैं।लेकिन कभी

इसे पढ़ते नहीं, जब वे इसे पढ़ेंगे तो उन्हें पता चलेगा कि नागरिकों के अधिकार क्या हैं और कर्तव्य क्या हैं?नागरिकता के लिए अधिकार और कर्तव्य की सीमाओं को जानना बहुत जरुरी है।इसलिए एक नागरिक के रुप में आपको राजनीतिक विषयों पर अपने विचार देने की आवष्यकता है।यह अच्छी बात नहीं है कि आप यह कहें कि मेरे पास कोई सुझाव है ही नहीं। उस समय आपको कोई भी आपको देष का अच्छा नागरिक नहीं कहेगा।इसलिए आप अपने विचारों की अभिव्यक्ति का अवसर का लाभ उठाएं।अब तो आपके विचारो की अभिव्यक्ति के लिए अलग मंच भी उपलब्ध हैं जैसेः आप अपने विष्वविद्यालय के वाद–विवाद कार्यक्रम में अपने विचार रख सकते हैं,छात्र निकाय में अपनी बात रख सकते हैं,राजनीतिक दलों की युवा ष्षाखाओं में अपनी बात रख सकते हैं अथवा राजनीतिक दलो में भाग लेकर अथवा इससे ऊपर समाज सेवा समूह आदि में हिस्सा लेकर अपने विचार व्यक्त कर सकते हैं।अब आपको यह निर्णय लेना है कि आपकी मेधा का उपयोग किस जगह पर सबसे उत्तम हो सकता है?धन्यवाद!

उपराष्ट्रपति के विचारों एवं सुझावों का निष्कर्ष – मैं आपकी चंहुमुखी सफलता की कामना करता हूं। आपके जीवन का एक पड़ाव मात्र ही आपका विष्वविद्यालय है।जब आप इसकी चारदीवारी के बाहर जाऐंगे तो यहां से बाहर का संसार आपको कठिन लगेगा,आप उसका डटकर सामना करें उसके सामने घुटने न टेकें। यह वह स्थल है जिसके लिए आपको पूरे मन से और हर तरह की तैयारी करनी होगी।मुझे पूरा विष्वास है कि आप अपने आपको हर परिस्थिति का सामना करने के लिए अवष्य तैयार करेंगे।अपने परिवार के लिए,अपने राज्य के लिए और इन सबसे ऊपर अपने देष भारत के लिए आप अपने को तैयार करें,अगर भारत यह चाहते हैं कि आपका देष भारत तरक्की के मार्ग पर अग्रसर हो।हमसब आज 21वीं शदी में प्रवेष कर चुके हैं।अगर भारत को विष्व में हर तरह से अव्वल बनाना है तो आप भावी नागरिकों को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हिस्सा लेना होगा चाहे वह

क्षेत्र तकनीकी दक्षता का हो या जन सेवा का।मैं आपकी हर तरह की कामयाबी का कामना करता हूं।मुझे पूरा विष्वास है कि आप अपने लक्ष्य की प्राप्ति में अवष्य कामयाब होंगे।

बहुत–बहुत धन्यवाद!